वैश्वीकरण और बहुभाषिकता

डॉ. विनोद गुप्ता
मन्दसौर (म.प्र.)

प्रकृति ने मानव को वाणी प्रदान की है जिससे वह संवाद स्थापित कर सकता है। लेकिन वार्तालाप के लिए भाषा का होना जरूरी है। भाषा क्या है ? विचारों की अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। यह अलग–अलग देशों में भिन्न–भिन्न हो सकती है। यही नहीं, एक ही देश के अलग–अलग स्थानों पर पृथक–पृथक भाषाएं भी बोली जाती हैं।

विश्व में कुल कितनी भाषाएं बोली जाती हैं, इस बारे में विशेषज्ञ एकमत नहीं हैं। कुछ के अनुसार दुनिया भर में 6,900 भाषाएं बोली जाती हैं, जबकि कुछ के अनुसार यह संख्या 7,111 है। हालांकि दुनिया की कई भाषाएं समय के साथ लुप्त हो गईं या लुप्त होने के कगार पर हैं। अभी तक इस बारे में कोई अकादमिक सहमति नहीं बनी है कि किस भाषा को 'विश्वभाषा' का दर्जा दिया जाए। वैसे, विश्व की कुछ प्रमुख भाषाएं इस प्रकार हैं–अंग्रेजी, मंदारिन, स्पेनिश, फ्रेंच, अरबी, बंगाली, रूसी, पुर्तगाली, उर्दू, इंडोनिशयाई, जर्मन, जापानी, नाइजीरियाई, पिजिन, तुर्की, वियतनामी, तागालोग, वू चीनी, कोरियाई, ईरानी, फारसी, हाउसा, मिस्री अरबी, स्वाहिली, जावा, इतालवी, थाई, योरूबा, होक्का, बर्मी, सूडानी, पोलिश, अल्जीरियाई अरबी और हिन्दी। माना जाता है कि अंग्रेजी दुनिया में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। इसके बाद मैंडारिन/मैंडरिन और फिर हिन्दी भाषा का स्थान है।

जहां तक भारत का प्रश्न है, हमारे यहां 450 से अधिक भाषाएं बोली जाती है। हिन्दी तो राजभाषा है ही, इसके अलावा अन्य भाषाओं असमिया, बंगाली, गुजराती, कन्नड, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलगू, उर्दू, बोडो, डोगरी, मैथिली, संथाली और मेडती आदि भी हैं। इस प्रकार कुल आधिकारिक भाषाएं 22 तथा अतिरिक्त आधिकारिक भाषा अंग्रेजी है। यानी आधिकारिक भाषाओं की कुल संख्या 23 है।

माना जाता है कि दुनिया की करीब 43 प्रतिशत आबादी दो भाषाएं बोलती है। जबकि 17 प्रतिशत लोग 3 या इससे अधिक भाषाएं बोल सकते हैं।

यह वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण या ग्लोबल वर्ल्ड का दौर है। ऐसे में एक या दो भाषाओं का ज्ञान पर्याप्त नहीं है। इसीलिए बहुभाषावाद या बहुभाषिकता की आवश्यकता प्रतीत हो रही है। जैसे–जैसे दुनिया के देश करीब आ रहे हैं, उनके व्यापारिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक रिश्ते मजबूत होने लगे हैं। ऐसे में बहुभाषिकता का महत्व और बढ़ जाता है।

अपनी मातृभाषा तो हर कोई जानता है। यह कोई बड़ी बात नहीं है। बड़ी बात तो यह है कि उसके अलावा आप कितनी भाषाओं के जानकार हैं। यानि उन्हें लिख, बोल, पढ़ और समझ सकते हैं। वाकई अनेक भाषाओं का ज्ञान उन्हें विलक्षण या जीनियस बनाता है। क्या आप जीनियस बनना नहीं चाहेंगे ?

अपनी मातृभाषा से प्रेम होना एक बात है और अन्य भाषाओं का ज्ञान होना दूसरी बात। व्यक्तित्व के विकास के लिए एक भाषा का ज्ञान होना ही काफी नहीं है। जरूरी है कि देश–विदेश की अनेक भाषाओं को जानें।

आज हमारा दायरा अपने शहर, प्रांत, देश तक ही सीमित नहीं रहा है, अपितु अनेक कारणों, उद्देश्यों की वजह से हमें अन्य प्रदेश और देशों में भी जाना पड़ता है। पढ़ाई–लिखाई, व्यापार–व्यवसाय, रोजगार आदि की वजह से हमें सीमा पार जाना होता है। कुछ लोग तो बचपन से ही विदेश में पढ़ने, रहने या बसने के सपने देखते हैं। सपने तभी पूरे हो सकते हैं जब आप विदेशी भाषाओं को भी सीखें। अन्यथा आप वहां अलग–थलग पड़ जाएंगे। न कोई आपकी बात समझ सकेगा और न ही आप सामने वाले की।

बच्चों में सीखने की प्रवृत्ति बलवती होती है। आमतौर पर मां–बाप उन्हें इंग्लिश मीडियम स्कूलों में पढ़ाते हैं। इससे बच्चा अपनी मातृभाषा के अलावा अंग्रेजी तो सीख ही लेता है। यदि पास–पड़ोस में कोई अन्य भाषा–भाषी परिवार रहता है, तो उनके बच्चों के साथ दोस्ती करने से वे उनकी भाषाओं को भी जानने–समझने लगते हैं। यदि उन्हें मौका मिले और माता–पिता उन्हें अन्य भाषाओं को सीखने के लिए प्रेरित करें, तो बचपन से ही उन्हें बहुभाषा का ज्ञान हो जाता है। जो कि आगे चलकर उनके जीवन में बहुत काम आता है।

अनेक भाषाओं का ज्ञान न केवल आत्मविश्वास बढ़ाता है, अपितु बेहतर कैरियर के अवसरों को भी बढ़ाता है। सामाजिक और सांस्कृतिक अवसरों का भी विस्तार होता है। बहुभाषा का ज्ञान होने से संवाद कौशलता बढ़ती है तथा वह बिना दुभाषिया की सहायता के स्वयं संवाद स्थापित कर सकता है। अन्यथा दुभाषियों के बगैर एक–दूसरे की बात समझना मुश्किल होता है। खासतौर पर जब आप किसी अन्य देश या प्रदेश में जाते हैं।

बहुभाषा का ज्ञान बौद्धिक क्षमता और स्मरणशक्ति को भी बढ़ाता है। इससे व्यक्ति अल्जाइमर जैसे रोग से भी बचा रह सकता है। अनेक भाषाओं के जानकार होने से कैरियर के अवसर भी बढ़ जाते हैं, खासतौर पर विदेशों में रोजगार के। यदि आपका ख्वाब विदेशों में रोजगार करने का है, तो वहां की भाषा सीखनी ही होगी। क्योंकि वहां आपकी मातृभाषा को बोलने–समझने वाला कोई नहीं होगा।

यदि आप पयर्टक में कैरियर बनाना चाहते हैं, तो आपको कई देशी और विदेशी भाषाओं में पारंगत होना चाहिए। क्योंकि पयर्टक तो किसी भी देश या प्रदेश से आ सकते हैं। एक गाइड के रूप में आपको उनकी भाषा में ही बताना पड़ेगा तथा उनकी जिज्ञासाओं का समाधान भी करना होगा।

यदि आप बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में रोजगार करने के इच्छुक हैं, तब भी आपको अंग्रेजी के अलावा अन्य प्रमुख देशों की भाषाएं आनी चाहिए। क्योंकि वहां कई देशों के साथ संवाद स्थापित करना पड़ते हैं।

कुछ लोग तो कई भाषाओं में धारा प्रवाह बोलकर लोगों का दिल जीत लेते हैं। विशेषकर जब चुनाव के दौरान प्रदेश विशेष का कोई नेता अन्य प्रदेश में वहां की भाषा में लोगों से संवाद स्थापित करता है या किसी एक देश का नेता अन्य देश को संबोधित करते हुए उनकी भाषा बोलता है। यह दिल को छूने वाली बात है।

यहां कुछ ऐसे बहुभाषी लोगों के बारे में देखिए, जो आपको अचंभित कर देंगे।

- राजनयिक एमिल क्रेब्स चीन में काम करते थे। वे 68 भाषाएं जानते थे। उनकी इस विलक्षण प्रतिभा के लिए उनकी मृत्यु के बाद उनका मस्तिष्क शोध के लिए सुरक्षित रखा गया था।
- ऐसा माना जाता है कि न्यूजीलैंड के डॉ. हेराल्ड विलियम्स जो कि एक पत्रकार और किसी समय 'द टाइम्स' के विदेश सम्पादक भी रहे थे, 58 भाषाओं के जानकार थे तथा वे इन भाषाओं को धाराप्रवाह में बोलते थे। वे एकमात्र व्यक्ति थे जिन्होंने लीग ऑफ नेशन्स, जेनेवा में भाग लिया तथा प्रत्येक प्रतिनिधि से उसकी ही भाषा में बात की।
- एमआईटी के विख्यात भाषाविद् 50 भाषाओं के जानकार हैं। उनका कहना है कि यदि हम किसी देश की संस्कृति के बारे में जानना चाहते हैं, तो वहां की भाषा का ज्ञान होना जरूरी है।
- अमेरिका के न्यूयार्क में टिमोथी डोनर 23 भाषाओं का ज्ञान रखता है। इन भाषाओं में हिन्दी, पश्तो, दक्षिण अफ्रीकी की कम जानी जाने वाली भाषा इसोंशोसा, गाम्बिया की वोलोफ और लेटिन अमेरिकन भाषा ओजिब्वे भी शामिल हैं। यूरोपीय भाषा फ्रेंच, स्पेनिश, इतालवी, जर्मन भाषा जानने वाला टिमोथी डोनर कई दूरस्थ प्रादेशिक क्षेत्रों की भाषाएं भी जानता है। उसने विभिन्न भाषाओं को बोलते हुए एक वीडियो यू–ट्यूब पर अपलोड किया था, जिससे लोगों को उसके बारे में पता चला और वह सम्पूर्ण विश्व में चर्चा का केन्द्र बना। इस वीडियो में वह 20 अलग–अलग भाषाओं में बात करते दिखाई दे रहा है।
- शेटलैंड डेरिक हार्निंग को 22 भाषाओं में वर्चस्व प्राप्त था। वे इन भाषाओं को धारा प्रवाह बोलती थीं। 1990 में ब्रुसेल्स में हुई यूरोप के बहुभाषा प्रतियोगिता में उन्हें शील्ड मिली थी। इसी प्रकार, जोरेन बेंडवाले 22 भाषाओं का जानकार है। 1987 में उन्होंने यह प्रतियोगिता जीती थी। प्रतियोगी को अलग–अलग भाषा में व्यक्ति से बात करनी थी।
- 18वीं सदी में जन्मे कार्डिनल ज्यूसेप कैस्पकर मेजोंफनी 38 भाषाएं और 40 बोलियां बोलते थे। माना जाता है कि 1854 से 1859 तक हांगकांग के गर्वनर रहे सर जॉन बॉवरिंग को 200 से ज्यादा भाषाओं का ज्ञान था।
- काटो लेम्ब विश्व की पहली ऐसी अनुवादक थी जिसे 16 भाषाएं आती थीं।
- केरल की सुचेता सतीष ने 140 भाषाओं में गाना गाकर गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है। 10 साल की उम्र में उसने 15 देशी–विदेशी भाषाओं में गाना गाने की कला में महारत हासिल कर ली थी। वे अभी दुबई में रहती हैं। 2005 में जन्मी सुचेता की विदेशी भाषाएं सीखने में रूचि 2014 में हुई। वर्ष 2018 में उसने 102 भाषाओं में गाना गाकर वाहवाही लूटी थी।

- 1954 में जन्मे लाइबेरिया मूल के लेबनानी जियाद युसुफ फजाह 59 भाषाओं के जानकार हैं। उन्होंने कई सार्वजनिक प्रस्तुतियों में इसे साबित भी किया है। उन्होंने बड़ी संख्या में विदेशी भाषाओं के मूल वक्ताओं के साथ संवाद किया है। वर्तमान में वे ब्राजील में रहते हैं।
- फ्रांस के ज्योर्जेस हेनरी रियट 19 भाषाओं के जानकार थे। वे सन् 1965 से 1971 के बीच संयुक्त राष्ट्र पारिभाषिकी विभाग के अध्यक्ष रहे हैं। इसी प्रकार, हंगरी के लॉम्बकाटो को भी आप कम न समझें। वे 16 भाषाओं में धारा प्रवाह बोल और उसमें बात कर सकते हैं।
- लूका पेम्पेसिएलो 11 भाषाओं के जानकार हैं। वे कोई भी भाषा सीख सकते हैं। इन्हें सीखने के लिए उनके पास 11 तरीके भी हैं। इतालवी उनकी मातृभाषा है, इसके अलावा वे अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, स्वीडिश, रूसी, डच, पुर्तगाली, मंडारिन आदि भाषाओं के जानकार हैं । वे एक साथ दो भाषा सीख भी लेते हैं और सिखा भी देते हैं।
- मास्को की बेला देव्यातिकिया जब चार साल की थी, ने एक रशियन टेलीविजन टेलेंट शो में रशियन, अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पैनिश, जर्मन, चाइनीज और अरबी भाषा में बात की तो सब हैरान हो गए। इस रशियन शो इनक्रेडिबल पीपल का वीडियो यू–ट्यूब पर वायरल हुआ। लाखों लोगों ने इसे लाइक और शेयर किया।
- भारत में ऐसे कई लोग हैं, जो एकसाथ कई भाषाएं जानते हैं। रामभद्राचार्य जो कि एक धार्मिक नेता हैं, फ्रेंच, अंग्रेजी, हिन्दी, उडिया, पंजाबी, मराठी, गुजराती, संस्कृत, ब्रज, अवधी के साथ–साथ अन्य कई भाषाएं बोलने में सक्षम हैं।
- अभिनेता कमल हसन तमिल के अलावा कन्नड, तेलगू, मलयालम, अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी आदि भाषाओं के जानकार हैं। इसी प्रकार, अभिनेता प्रकाश राज तमिल, तेलगू, हिन्दी, मलयालम, अंग्रेजी, तुलु, कन्नड़ आदि भाषाओं के जानकार हैं। अभिनेत्री प्रिया आनंद भी तमिल, तेलगू, अंग्रेजी, बंगाली, मराठी, स्पेनिश, हिन्दी आदि भाषाओं पर पकड़ रखती है।
- स्वामी विवेकानन्द अपनी मातृभाषा के अलावा, संस्कृत, बांग्ला, हिन्दी और अंग्रेजी के ज्ञाता थे।
- वीरूंद गांधी देशी–विदेशी 14 भाषाओं में धाराप्रवाह वार्तालाप करने में प्रवीण थे।
- हिजयानिइस टू इकोनोमुस ने शौक–शौक में 30 भाषाएं सीख ली थी। वे ग्रीस के क्रीट द्वीप के निवासी हैं। वे एक यूरोपीय कमीशन में काम करते हैं। उन्हें बचपन से ही भाषाएं सीखने का शौक था। वे ज्यादातर यूरोपीय भाषाएं जानते हैं। इसके अलावा, अरबी, मैंडरिन, तुर्की, फारसी, समेत कई भाषाएं बोल लेते हैं।
- पुणे का अद्वेत जब 7 साल का होकर सेंट मैरी स्कूल के क्लास दूसरी का विद्यार्थी था तब उसे 7 भाषाओं में महारत हासिल थी। मराठी, हिन्दी, स्पैनिश, जर्मन और मेंडरिन सहित सात भाषाएं उसे आती हैं। रॉयल ऑफ मेड्रिड लंदन और इम्पीरियल स्कूल ऑफ लंदन में वह परफार्म कर चुका है।
- शिमला का नैतिक भी चार साल की उम्र में पांच भाषाओं का जानकार था । उसकी भाषाई विलक्षणता को देख शिक्षक भी आश्चर्यचकित थे।

जिस प्रकार बच्चे अपनी मातृभाषा को बोल, लिख और समझ सकते हैं, उसी प्रकार अन्य भाषाओं को भी जान, समझ, लिख और बोल सकते हैं। बस थोड़े अभ्यास की जरूरत है। यदि बचपन में न सीख पाएं हों तो बड़े होने पर भी सीख सकते हैं। इसमें शर्म, झिझकने की आवश्यकता नहीं है।

गर्भावस्था के दौरान जो महिलाएं आपसी बातचीत में दो या दो से अधिक भाषाओं का इस्तेमाल करती हैं, उनके बच्चे ज्यादा स्मार्ट होते हैं। ऐसी माताओं के बच्चे आवाज के प्रति ज्यादा संवेदनशील होते हैं और भाषा में भी दूसरों से बेहतर होते हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ बार्सिलोना में हुई शोध में पता चला कि दो भाषाएं बोलने वाली मां के बच्चे गर्भ में भी अलग–अलग आवाज के प्रति एक भाषा बोलने वाली मां के बच्चे से ज्यादा सक्रिय होते हैं। वे ध्वनि में अंतर को ज्यादा बेहतर तरीके से समझ पाते हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ बार्सिलोना की इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरोसाइंस में शोधार्थी डॉक्टर नतालिया गोरिना केरेटा बताती हैं–बच्चा गर्भ में ही आवाज के ऊंचा या धीमा होने को महसूस करता है। गर्भ में बच्चा स्वर अक्षरों की आवाज को भी समझने लगता है।

बार्सिलोना विश्वविद्यालय की ही प्रोफेसर डॉक्टर कार्ल्स एस्केरा कहती हैं–गर्भ में ही बच्चा आवाज के अंतर को उतने ही ज्यादा स्पष्ट तरीके से समझता है, जितने ज्यादा तरीके के शब्द वह सुनता रहता है। अगर मां गर्भ में पल रहे अपने बच्चे से ज्यादा से ज्यादा बातचीत करे और अलग–अलग भाषाओं का इस्तेमाल करें, तो इसका भी बेहतर असर बच्चे के विकास पर पड़ता है। शोध में पता चला है कि बच्चा गर्भ के छठे महीने से नौवें महीने तक बाहरी आवाजों के प्रति सबसे ज्यादा संवेदनशील होता है। लेकिन उस तक उच्च और मध्यम आवृत्ति वाली आवाजें बहुत क्षीण और कमजोर होकर पहुंचती

हैं। जो आवाजें धीमी आवृत्ति की होती हैं उन पर बच्चा ज्यादा प्रतिक्रिया देता है। दरअसल, धीमी आवृत्ति वाली आवाजें गर्भ तक ज्यादा स्पष्ट तरीके से पहुंचती हैं।

डॉक्टर एस्केरा कहती हैं–परिवार में बोली जाने वाली भाषा बच्चे की न्यूरल कोडिंग को मॉड्यूलेट करती है। उससे बात करने वाले लोग जितना ज्यादा भाषाओं में बात करेंगे, बच्चे का दिमाग उतना ही ज्यादा विकसित होगा। विश्व के 43% लोग कम से कम द्विभाषी हैं। मतलब द्विभाषी होना सामान्य है।

शोध में यह भी पता चला है कि गर्भावस्था के दौरान ही नहीं, जन्म के बाद बच्चे से अलग–अलग भाषा में बात करने से वह जल्दी बोलना शुरू करता है। भाषा और उसके शब्दों की आवाज में अंतर करने लगता है। इससे एक साथ वह कई भाषाएं सीख जाता है। पूर्ववर्ती शोधों से पता चला है कि एक से ज्यादा भाषा बोलने वाले बच्चों का दिमाग तेज काम करता है।

कहते हैं कि माता–पिता के बोलने का बच्चे पर असर पड़ता है। एक नए शोध में खुलासा हुआ है कि द्विभाषी माताओं के बच्चे अधिक समझदार होते हैं। दो भाषाएं बोलने वाली माताओं के बच्चे एक भाषा बोलने वाली माताओं के बच्चे की तुलना में ध्वनियों के जवाब में मस्तिष्क में अलग–अलग तरह की प्रतिक्रियाएं देते हैं।

इस खोज से पता चलता है कि कई भाषाओं को सुनना जन्म से पहले ही भाषा अधिग्रहण के लिए मस्तिष्क के विकास को प्रभावित करना शुरू कर सकता है। खास बात यह है कि नवजात शिशु आवाज सुनने के बाद विभिन्न भाषाओं के बीच अंतर भी कर सकते हैं। शोध के मुताबिक जन्म से पूर्व ध्वनियां विकसित होते मस्तिष्क पर असर डालती हैं। शोधकर्ताओं द्वारा द्विभाषी घरों में पले–बढ़े चार माह के शिशुओं में मस्तिष्क गतिविधियों के अलग–अलग पैटर्न देखे गए।

द्विभाषी माताओं के बच्चे कई आवाजों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। इस कारण वह अधिक प्रतिक्रिया देते हैं। यह उनके मस्तिष्क के पैटर्न में होने वाले बदलाव में साफ दिखाई देता है। द्विभाषी माता की तुलना में एक भाषा–भाषी माता की आवाज अधिक जटिल होती है। इससे बच्चों का मस्तिष्क आवाज की जटिलता पर प्रतिक्रिया देने लगता है।